VISION AHEAD
(An Online Peer Reviewed/ Refereed Bilingual International Journal of Multidisciplinary Studies)
VOLUME 1, JAN-DEC 2023 **ISSN:**

मार्क्सवादी आलोचना में डॉ0 रामविलास शर्मा का योगदान

सोनी सिंह
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
सुर्यबक्स पाल स्मारक महाविद्यालय,
बनकटी, बस्ती, उत्तर प्रदेश

सारांश

डॉ0 रामविलास शर्मा हिन्दी के प्रख्यात मार्क्सवादी समीक्षक, विचारक, भाषाविद् और कवि हैं। वे पूँजीवाद को सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरा मानते हैं। डॉ0 शर्मा, कला और साहित्य में भेद नहीं करते, वे मानते हैं कि साहित्य का शिल्प, उसके विभिन्न रूप सामाजिक विकास से ही संभव हुए हैं। वे मानते हैं कि भाषा कभी भी विचार शून्य नहीं हो सकती है। वे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना पद्धति से बहुत प्रभावित हैं। भारतेन्दु युग को वे हिन्दी भाषी जनता का जातीय साहित्य मानते हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी को इसलिए महत्व देते थे की वह पुरानी व्यवस्था को बदलने की मांग के समर्थक थे। उन्होंने प्रेम की अपेक्षा करुणा को महत्व दिया। डॉ0 शर्मा को प्रेमचंद इसलिए प्रिय लेखक लगते हैं कि उन्होंने साम्राज्य वादियों के द्वारा फैलाए गए भ्रमों को छिन्न–भिन्न कर दिया। प्रेमचंद की आवाज भारतीय जनता की अजय आवाज थी। निराला के स्वाधीनता प्रेम नारी व प्रकृति के मोहक चित्र, नए मानवतावाद के प्रतिष्ठापक, सौंदर्य उल्लास के कवि के रूप में स्वीकार किया। डॉ0 शर्मा ने तीन कवियों मुक्तिबोध, शमशेर, और नागार्जुन का भी मूल्यांकन किया, उनकी इतिहास दृष्ट कार्म्सवादी थी। वे मानते थे कि भाषा का अध्ययन, उसकी ध्वनि–प्रकृति, भाव–प्रकृति, मूल्य शब्द भण्डार को दृष्टि में रखकर करना चाहिए। उनकी विवेचना पद्धति पर आचार्य शुक्ल का प्रभाव है। प्रतिपक्ष की मान्यताओं का खण्डन, व्यंग भर्त्सना करते हैं, किन्तु अनपे मत को प्रमाणिक मानकर निर्णय करते हैं।